Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

सामयिक परिप्रेक्ष्य में वृद्धजनों की स्थिति

डॉ. रचना श्रीवास्तव

प्राध्यापक (समाजशास्त्र)

शा.क. स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

Article Info
Volume 4, Issue 2
Page Number : 26-33

Publication Issue :
March-April-2021

Article History
Accepted : 10 March 2021
Published : 15 March 2021

सारांश – वृद्धजन किसी भी देश की जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण भाग होते हैं, जिनकी अनदेखी नहीं की जा सकती है। साथ ही किसी भी समाज के संगठन एवं विकास में वृद्धजनों की भूमिका भी अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। वृद्धजन का वर्ग एक ओर समाज की विरासत अर्थात् पुरातन परम्पराओं एवं व्यवस्थाओं का पोषण एवं संरक्षण करता है तथा दूसरी ओर अपने जीवन के खट्टे–मीठे अनुभवों की सहायता से नवीन पीढ़ी का मार्गदर्शन भी करता है। यह वर्ग समाज के अतीत को वर्तमान से जोड़ने में एक सेतू के रूप में कार्य करता था परन्तु आज वैश्वीकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण आदि के कारण जो नवीन मूल्य प्रतिमान विकसित हुए हैं, उनमें वृद्धजनों का जीवन अनेक समस्याओं से ग्रस्त हो रहा है। आज परिवार में वृद्धों की देखभाल एक समस्या बन गयी है। वर्तमान में वृद्धों की हालत बहुत दयनीय हो गयी है। यह एक चिंता का विषय है। प्रस्तुत शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य वर्तमान में रीवा नगर के परिवारों में वृद्धों की स्थिति का अध्ययन करना है।

मुख्य शब्द :– वैश्वीकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण, जीवन प्रत्याशा, पोषण एवं संरक्षण।

यदि हम पिछले कुछ दशकों के भारत की वृद्ध आबादी का अध्ययन करें तो हम देखते हैं कि यह सर्वत्र बढ़ रही है। यह गिरती हुई मृत्यु दर तथा बढ़ती जीवन प्रत्याशा से संभव हुई है। इसके कारण अच्छी चिकित्सा सुविधाऐं तथा उपयुक्त शिक्षा है। भारत में वरिष्ठ नागरिकों की संख्या लगातार बढ़ रही है। साथ–साथ इनकी औसत आयु भी बढ़ रही है। सामान्य स्वास्थ्य का स्तर बेहतर हुआ है। सन् 1951 में जहां 60 वर्ष से ऊपर की आयु के 1.98

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

करोड़ वरिष्ठ नागरिक थे, वहीं सन् 2011 की जनगणना में उनकी संख्या 10.4 करोड़ हो गई।[1] अनुमान है कि वर्ष 2021 में यह संख्या 14.3 करोड़ और 2026 में 17.3 करोड़ होगी।

पारम्परिक भारत में वृद्धजनों को परिवार तथा समाज में ऊंचा स्थान प्राप्त था। तत्कालीन परिवार की पहचान परिवार के सबसे वृद्ध व्यक्ति के नाम से होती थी। सभी प्रकार के निर्णय वृद्धजन ही किया करते थे। संयुक्त परिवार प्रणाली के अन्तर्गत वृद्धों को सामाजिक सुरक्षा प्राप्त थी परन्तु जैसे–जैसे औद्योगीकरण, नगरीकरण व सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई, वैसे–वैसे ही संयुक्त परिवारों का विघटन होने लगा।[2] वर्तमान में पारिवारिक संरचना में परिवर्तन होने तथा एकाकी परिवारों में वृद्धि व परिवार के सदस्यों की आर्थिक कार्यों में भागीदारी होने के कारण वृद्धों की देखभाल एक समस्या बनती जा रही है। पश्चिमी सभ्यता के कारण छोटे परिवार की लालसा तथा रोजगार के लिए एक जगह से दूसरी जगह पलायन के कारण वृद्धों को अपने परिवार का समर्थन नहीं मिल पा रहा है तथा उनकी परिवार से दूरी बढ़ती जा रही है। इन परिस्थितियों ने अधिकांश वृद्धों को घर में कुछ समय के लिए नितान्त अकेले रहने के लिए बाध्य कर दिया है। वृद्धों के बीमार होने की दशा में भी उनकी देखभाल के लिए परिवार में युवा सदस्यों की अनुपलब्धता वर्तमान में एक बड़ी समस्या के रूप में सामने आ रही है।[3]

इसके अतिरिक्त वृद्धजनों की सबसे बड़ी समस्या उनकी निजता स्वतन्त्रता एवं गतिशीलता को बदस्तूर बनाये रखने की है।[4]

जीवन के इस अंतिम पड़ाव की अवस्था में वृद्धजन अपने परिजनों तथा पड़ोसियों एवं मित्रों आदि पर शारीरिक, मानसिक, भौतिक तथा भावात्मक रूप से अधिक निर्भर होते हैं। उनका परिवेश ही उनके सामाजिक जीवन की धुरी है क्योंकि उनके सामाजिक सम्बन्धों का ताना–बाना उनके वास्तविक निवास के आस–पास ही सिमट कर रह जाता है।[5] परन्तु वर्तमान की भागदौड़ भरी जिन्दगी में किसी के पास भी समय नहीं है कि वे उनकी भावुकता, पसन्द ना पसन्द तथा स्वास्थ्य समस्याओं को सुने। अतः वे स्वयं को बहुत अकेला अनुभव करते हैं।[6] सामाजिक गतिविधियों से उनकी सहभागिता लगभग समाप्त होती जा रही है। पीढ़ी अन्तराल के कारण बच्चे वृद्धजनों की बात का विरोध करते हैं जिससे वे अपने ही घर में पराये जैसा व्यवहार महसूस कर रहे हैं।

अतः भारत जैसे विकासशील देश में जहां आधुनिकीकरण के दौरान वृद्धों की स्थिति खराब हो रही है। वहीं इन समस्याओं के दृष्टिगत भारत सरकार ने उन्हें सुरक्षा और संरक्षण प्रदान करने के लिए अनेक योजना संचालित की है। जैसे– स्वास्थ्य रक्षा योजना, बचत बीमा और निवेश योजना, राष्ट्रीय वयोश्री योजना तथा वृद्धावस्था पेंशन योजना आदि। अतः वर्तमान विषय की महत्ता को देखते हुये इस पर शोध कार्य किये जाने की अत्यधिक आवश्यकता है।

उद्देश्यः– प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. वृद्धों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

2. परिवार में वृद्धों की स्थिति का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्रः–

प्रस्तुत अध्ययन मध्य प्रदेश में स्थित रीवा जनपद के रीवा नगर में सम्पन्न किया गया है।

अध्ययन विधिः–

प्रस्तुत अध्ययन वर्णात्मक शोध प्ररचना के अन्तर्गत किया गया है।

निदर्शनः–

रीवा नगर के 50 वृद्धजनों का चयन दैव निदर्शन पद्धति के प्रयोग द्वारा किया गया है तथा उनसे सूचनाओं का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है।

उपलब्धियाँः–

अध्ययन की प्रमुख उपलब्धियां अधोवर्णित हैं।

उत्तरदाताओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति

तालिका संख्या–1

	सूचक	**संख्या**	**प्रतिशत**
क्र.सं.	आयु		
1.	60-70 वर्ष	30	60
2.	70-80 वर्ष	10	20
3.	80+ वर्ष	10	20
	युग	**50**	**100**

तालिका संख्या–2

जातिः–

क्र.सं.	**जाति का विवरण**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1.	सवर्ण	27	54
2.	पिछड़ी	13	26
3.	अनुसूचित	10	20
	योग	50	100

तालिका संख्या–3

शिक्षाः–

क्र.सं.	**शिक्षा का विवरण**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1.	उच्च शिक्षित	18	36
2.	अल्प शिक्षित	32	64
	योग	**50**	**100**

तालिका संख्या–4

क्र.सं.	**वैवाहिक स्थिति**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1.	विवाहित	35	70
2.	विधुर	15	30
	योग	50	100

तालिका संख्या–5

क्र.सं.	परिवार की प्रकृति	संख्या	प्रतिशत
1.	एकाकी	30	60
2.	संयुक्त	20	40
	योग	50	100

तालिका संख्या–6

क्र.सं.	निजी आय	संख्या	प्रतिशत
1.	है	28	56
2.	नहीं	22	44
	योग	50	100

तालिका संख्या–7

परिवार के सदस्यों का व्यवहार			
क्र.सं.	परिवार का व्यवहार	संख्या	प्रतिशत
1.	अच्छा	15	30
2.	खराब	35	70
	योग	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्यों का व्यवहार उनके प्रति अच्छा है। जबकि 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि उनके परिवार के सदस्यों का व्यवहार उनके साथ खराब है।

तालिका संख्या–8

पारिवारिक निर्णयों में भूमिका			
क्र.सं.	पारिवारिक निर्णयों में भूमिका	संख्या	प्रतिशत
1.	राय ली जाती है	20	40
2.	नहीं ली जाती है	30	60
	योग	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार पारिवारिक निर्णयों में उनकी राय लेते हैं तथा सर्वाधिक 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार उनकी राय नहीं लेते हैं।

तालिका संख्या–9

भोजन के प्रति संतुष्टि			
क्र.सं.	**भोजन से संतुष्टि**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1.	हाँ	22	44
2.	नहीं	28	56
	योग	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 44 प्रतिशत उत्तरदाता परिवार में मिलने वाले भोजन से संतुष्ट हैं जबकि 56 प्रतिशत उत्तरदाता भोजन से संतुष्ट नहीं है।

तालिका संख्या–10

बीमारी में परिवार के द्वारा देखभाल			
क्र.सं.	**देखभाल करते हैं**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1.	हाँ	18	36
2.	नहीं	32	64
	योग	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि बीमार पड़ने पर 36 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार उनकी देखभाल करते हैं जबकि सर्वाधिक 64 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार उनकी देखभाल नहीं करते हैं।

तालिका संख्या–11

चिकित्सा करवाने की स्थिति			
क्र.सं.	**चिकित्सा करवाते हैं**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1.	हाँ	27	54
2.	नहीं	23	46
	योग	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 54 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार बीमारी में उनकी चिकित्सा करवाते है।

तालिका संख्या–12

रिश्तेदारों के यहां होने वाले उत्सवों में परिवार के साथ भागीदारी			
क्र.सं.	**भागीदारी करते हैं**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1.	हाँ	22	44
2.	नहीं	28	56
	योग	**50**	**100**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि रिश्तेदारों के परिवारों में होने वाले उत्सवों में 44 प्रतिशत उत्तरदाता अपने परिवार के साथ सम्मिलित होते हैं तथा 56 प्रतिशत उत्तरदाता भागीदारी नहीं करते हैं।

निष्कर्ष :–

वर्तमान में भारतीय समाज में वृद्धजनों की दशा बहुत दयनीय है। परिवार में सदस्यों का व्यवहार वृद्धजनों के प्रति अच्छा नहीं है। पारिवारिक निर्णयों में उनकी राय नहीं ली जाती है। वे परिवार द्वारा मिलने वाले भोजन से भी संतुष्ट नहीं हैं। इसलिये यह आवश्यक है कि वरिष्ठ नागरिकों के पारिवारिक सदस्यों तथा रिश्तेदारों को अभिप्रेरित किया जाए कि वे उनकी उचित देखभाल करें। इसके साथ–साथ वरिष्ठजनों की जिम्मेदारी सरकार की एक अनिवार्य सामाजिक तथा नैतिक जिम्मेदारी हो। इसके अलावा उन वृद्धजनों के ऊपर विशेष ध्यान देने कि

आवश्यकता है जो किन्हीं कारणों से सरकारी योजनाओं का लाभ लेने में असमर्थ हैं। यदि सरकार उम्रदराज तथा समाज के हाशिए पर खड़े इन लोगों को देश की उन्नति की धारा में ला सके तो वह इन वृद्धजनों जिन्होंने अपने समय में देश के विकास में अपना योगदान दिया था के प्रति सच्ची सहायता तथा सम्मान होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जनगणना, 2011 भारत सरकार
2. यादव, के.एन.एस. (2011), ''एजिंग सम इमरजिंग इश्यूज'', नई दिल्ली : मानक पब्लिकेशन्स, पृष्ठ–28
3. रेडी, पी.एच. (1996) ''दि हैल्थ आफ दि एज्ड इन इंडिया'', हैल्थ ट्रांजीशन रिव्यू, सप्लीमेंट टू वॉल्यूम 6,पृष्ठ–234
4. द्विवेदी, परेश (2014), ''वृद्धावस्था के विविध आयाम, समस्याएं एवं चुनौतियाँ'' पृष्ठ–42
5. अग्रवाल, उमेश चन्द्र (2009), ''बढ़ते बुजुर्ग, घटती सुरक्षा'' पृष्ठ–52
6. ढिल्लन, परमजीत कौर (1992), ''साइको–सोशल आसपैक्ट्स ऑफ एजिंग इन इंडिया'' नई दिल्ली : कान्सेप्ट पब्लिशिंग, पृष्ठ–18
7. योजना पत्रिका, भारत सरकार, जून 2019